SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

अंक-3, खण्ड-2, अप्रैल - जून 2025 E-ISSN : 2584-2900

हिन्दू जागरण एवं मानवतावाद

रामप्रसाद रजक
शोधार्थी (शिक्षा शास्त्र)
दिनेश कुमार मिश्रा
सह-प्राध्यापक (शिक्षा शास्त्र)
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सारांश

नवजागरण, पुर्नजागरण, हिन्दू जागरण, आदि में जागरण शब्द बहुत सुंदर है। जो एक बार गिरकर, बार-बार गिर कर विकास की मुख्यधारा में सम्मलित होने पुन: जीवन प्राप्त करने का सूचक है, मनुष्य यह जो दोबारा प्रयास करता है, यह अति महत्वपूर्ण हे, यह सफलता अवश्य दिलाता है। यह सफलता की कुंजी है। भारत में विदेशी आक्रान्ताओं के आक्रमणों के कारण हिंदू धर्म जब नष्टप्राय हो गया था, तब समाज में अनेक भ्रान्तियॉं फैल गई थी जिन्हें दूर करना आवश्यक था, इस शोध पत्र लेखन का उद्देश्य भी यही है कि समाज में इस तरह के प्रयास होने चाहिए, कुव्यवस्थाएँ समाप्त की जानी चाहिए, जिससे स्वच्छ श्रेष्ठ समाज व राष्ट्र सदैव जिंदा बना रहे, हमारी संस्कृति सुरक्षित ओर अक्षुण्ण रहे' इस शोध पत्र में हिंदू जागरण काल की मुख्य बातों को उजागर किया जायेगा, तथा मानव कल्याण के लिए जन्मी भावना विचार धारा मानवतावाद की उपादेयता कार्य प्रणाली व प्रगति की समीक्षा की जायेगी 'कि किस प्रकार संकट काल में भी अच्छे विचारों को कैसे जीवित रखा जा सकता है, जीवित ही नहीं किस प्रकार विकसित किया जा सकता है, उसको कलित एवं पल्लवित किया जा सकता है।

बीज शब्द

नवजागरण, पुर्नजागरण, मुख्यधारा, कुंजी, आक्रान्ता, नष्टप्राय, कुव्यवस्थाएँ, मानवकल्याण, उपादेयता, समीक्षा, अक्षुण्ण, उजागर, फलित पल्लवित।

प्रस्तावना

आज भारत को ऐसे कर्मठ युवाओं की आवश्यकता है, जो अपनी ईमानदारी, कर्मठता, सत्यता आदि मानवीय भावनाओं को, मानवतावादी विचारों को स्वयं तो धारण करें ही साथ ही लोगों को अपने आचरण द्वारा करके दिखाएँ ताकि आने वाले समय में विश्व बंधुत्व, भाईचारा, तथा ''बसुधैव कुटुम्बकम्'' विश्व शांति जैसे विचार और भावनाओं को विस्तार एवं श्रेष्ठ पायदान मिल सके, इसी उद्देश्य को लेकर यह शोध पत्र लिखा गया है ताकि मानव कल्याण एवं सामाज एवं विश्व कल्याण में वॉंछित वृद्धि की जा सके' तथा तात्कालिक सुख एवं शांति को अक्षुण्ण किया जा सके। यह शोध पत्र भारतीय समाज एवं नैतिक मूल्यों के पुरातन संबंधों की व्याख्या करता है। साथ ही यह हिन्दू जागरण के दार्शनिक, सामाजिक, एवं सांस्कृतिक ऐतिहासिक पक्षों और उनके नैतिक मानवतावादी विचारों को प्रकट करता है। हिंदू जागरण एक धार्मिक व सामाजिक आन्दोलन है। जो हिंदू धर्म के पुनुरूथान के लिए 18वीं 19वीं शताब्दी में चलाया गया, जिसमें हिंदू धर्म में फैली रूढ़ियों जाति प्रथा सती प्रथा पर्दाप्रथा के विरोध में उनके उन्मूलन के लिए किया गया जिससे भारतीय समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन आया शिक्षा में भी बदलाव किया गया। हिंदू धर्म का विकास इसी आन्दोलन से आरंभ हुआ। जब देश व समाज के विभिन्न लोगों ने मिलकर एक स्वर में रूढ़ियों व आडम्बरों का विरोध किया, और मानवता वादी गुणों को अपनाने का आहवान किया। इसीलिए इसे धार्मिक सुधारवादी आन्दोलन कहा गया। इसमें योग, ध्यान, एवं आध्यात्मिकता की भी बात की गई। मध्यकाल में संत कवियों - कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई व गुरू नानक देव आदि ने समाज में फैली रूढ़ियों को अपने काव्य के माध्यम से उजागर किया व मानवतावादी गुणों सहयोग, दया प्रेम, भक्ति आदि को अपनाने पर बल दिया तथा आधुनिक काल में राजाराम मोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, महर्षि वाल्मीकि, स्वामी विवेकानंद, आदि ने अपने विचार देकर समाज को नई दिशा प्रदान की' जिससे भारतीय समाज सुधार कर आज इस उन्नति को प्राप्त हुआ है।

शोध विधि

इस शोध पत्र में वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, तथा अवलोकन विधियों का प्रयोग किया गया है' आवश्यक जानकारी का संकलन पुस्तकालय में उपलब्ध-पुस्तकों से किया गया है, इसके अतिरिक्त मेरा स्व अनुभव एवं विचार मैंने सम्मलित किया है अध्यापन कार्य के दौरान पाठ्यक्रम एवं गैर पाठ्यक्रम की पुस्तकों को पढ़ने का अवसर प्राप्त होता है, इससे एक प्रकार के ज्ञान का संचय हृदय के अंदर हो जाता है, जिसका प्रयोग इस शोध पत्र लेखन में किया गया है। इसके अतिरिक्त धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन मनन करने के वाद मानवतावादी कल्याणकारी मानवहितकारी भावना को विकसित करने का प्रयास किया गया है।

शोध विस्तार

हिंदू धर्म एक महानतम् सनातन धर्म है जिसका मुख्य उद्देश्य मानव कल्याण एवं जनहित तथा परोपकार है विदेशी आक्रान्ताओं को हिंदू धर्म की महानता एवं समृद्धि देखकर जलन होती थी, वे इसे समूल नष्ट करना चाहते थे, इसीलिए उन्होंने कई बार भारत पर आक्रमण किया और धार्मिक स्थलों को लूटा उसके ज्ञान के कोष पुस्तकालयों को जलाया तथा नष्ट किया किंतु हिंदू धर्म अपनी महानता एवं श्रेष्ठता के कारण फिर भी बचा रहा व पुष्पित- फलित एवं पल्लवित होता रहा' किंतु इन आक्रमणों के दौरान हिंदू धर्म को कुछ तो हानि पहुँची इसके धर्म ग्रंथों, पुस्तकों, अनुभवों को नष्ट कर दिया गया, मंदिरों व धार्मिक स्थलों को नष्ट कर दिया गया, अथवा उन पर कब्जा कर लिया गया, हिंदू समाज जो अपने संगठन एवं एकता के लिए जाना जाता था' व विघटित हो गया, टूट गया, ऊँच-नीच के भेदभाव तथा छुआछात का शिकार हो गया' बहुत बड़ी संख्या में हिंदुओं का जबरन धर्म परिवर्तन करा दिया गया' समाज में कई प्रकार की अव्यवस्थाएँ फैल गई, स्त्रियों की दशा खराब हो गई, तब कुछ समाज सुधारकों एवं संत कवियों ने हिंदू धर्म व समाज के पुनुरूथान के लिए एक आंदोलन चलाया जिसे हिंदू जागरण के नाम से जाना जाता है' इसमें कुछ नैतिक मानवतावादी आदर्शों को पुन: स्थापित करने का श्रेष्ठ प्रयास किया गया' सर्वप्रथम समाज में समानता लाने के लिए भेदभाव को समाप्त करने, सबको विकास के समान अवसर देने की बात की गई, तथा शिक्षा को जनजन तक पहुँचाने की बात की गई, नारी शिक्षा को बढ़ावा दिये जाने की बात की गई जिससे नारी को भी देश के विकास में

सहभागी बनाया जा सके' सभी धर्मों को समान मानने का विचार रखा गया, कोई भी धर्म किसी धर्म से श्रेष्ठ या निम्न नहीं है, सभी धर्म ईश्वर तक पहुँचने तथा अच्छे गुणों को जीवन उतारने के साधन हैं, इनकी बजह से किसी को दुख या तनाव में नहीं रहना चाहिए' जैसा कि कहा गया है। ''धर्मो रक्षति रक्षित:'' अर्थात् धर्म रक्षा करने वालों अपने मानने वालों की रक्षा करता है, तथा उनके विकास का साधन बनता है। इस धर्म विकास आन्दोलन में आपसी सहयोग, दया, प्रेम, सहिष्णुता, सदाचार, समानता जैसे विचारों व ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की भावना, मानव स्वतंत्रता, अनाचार व अत्याचार के विरूद्ध लड़ने का विचार आदि का उद्भव एवं विकास हुआ, वहीं मानवतावादी कार्य है' व मानवतावाद को जीवन में धारण कर लेना सबसे बड़ी सफलता है' हिंदू नवजागरण 19वीं व 20वीं सदी में भारतीय संस्कृति धर्म, एवं समाज के सुधार के लिए चलाया गया, इसमें मानवतावादी भावनाएँ एवं विचार सबसे ऊपर थे, जिनकों समाज में प्रसारित करना- उनकों ठीक तरह स्थापित करना मुख्य चुनौति थी। इसमें मानव की गरिमा, श्रेष्ठता, सुख एवं महत्व में वृद्धि करने के लिए सामाजिक समानता न्याय व धर्म की स्थापना करने के लिए भारत में फैली अज्ञानता एवं निरक्षरता को दूर करने के लिए प्रमुख प्रयास किये गये' हिंदू नव जागरण आंदोलन आधुनिक विचारों एवं भारतीय परम्पराओं एवं संस्कृति का समन्वय था' हिंदू जागरण में कुछ मानवतावादी सिद्धांतों को समाहित किया गया, इनमें प्रमुख थे- समानता, जाति उन्मूलन, सामाजिक न्याय, व्यक्ति की गरिमा गरीबों की मदद, आडम्बरों की बुराई करना, मानवता की सेवा करना, सतीप्रथा- पर्दाप्रथा का अंत, नारी शिक्षा को बढ़ावा देना, धार्मिकता एवं आध्यात्मिकता का प्रसार इत्यादि' हिंदू जागरण में कई समाज सुधारकों, लेखकों एवं कवियों ने अपना अमूल्य योगदान दिया जैसे स्वामी दयानंद सरस्वती ने हिंदू समाज को ही वही पूरे विश्व को ''वेदों की ओर लौटो'' का नारा दिया, जिससे लोग वैदिक गुणों को अपना कर लाभ उठावें' स्वामी- विवेकानंद जी ने बताया कि ''मानव सेवा ही माधव सेवा है'' उनके अनुसार हर जीव में परमात्मा का निवास होता है। जीव-मात्र की सेवा करके हम मोक्ष के द्वार तक पहुँच सकते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा सत्य, अहिंसा सर्वधर्म समभाव, अछूतों सुधार, ग्राम स्वराज तथा आत्मनिर्भरता सच्चे मानवतावादी के लक्षण होने चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को इन सिद्धांतों का आदर करना चाहिए। आधुनिक समय में हिंदू नव जागरण तथा मानवतावाद का प्रभाव स्पष्ट

देखा जा सकता है, लोग आज भी धार्मिक कार्य बड़ी आस्था के साथ करते हैं शिक्षा के स्तर में लगातार सुधार हो रहा है, लोगों की सोच वैज्ञानिक तथा विश्व भाईचारे की हो गई है' जाति, लिंग धर्म, भेद, कम हो रहे हैं। संविधान में मानवतावादी विचारों को स्थान दिया गया है।

निष्कर्ष

हिन्दू नवजागरण ने भारतीय समाज के ढाँचे को बदल कर रख दिया है, मानवतावाद ने धर्म में लोगों की आस्था का गहरा कर दिया है। इसने समन्वित समावेशी मानवतावादी समाज की स्थापना की है। जो सबको लेकर चलने की बात करता है। ''सबका साथ सबका विकास'' आज का प्रचलित नारा है। आज सभी को विकास के समान अवसर प्राप्त है, विचार व्यक्त करने का अधिकार है, स्वतंत्रता को कार्य करने का अधिकार है, बस दूसरे की स्वतंत्रता का हनन नहीं होना चाहिए। हिंदू धर्म सबसे अधिक मानवतावादी धर्म है, जो सत्य के निकट है प्रत्येक मानव को मानवतावादी जीवन को अपनाना चाहिए, तभी जीवन का लक्ष्य पूर्ण होगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. पाठक पी.डी. एवं त्यागी जी.एस.डी 2008-2009 '' शिक्षा के सामान्य सिद्धांत'' अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा (उ.प्र.)
2. त्यागी गुरसरनदास - 2016-17 '' शिक्षा के दार्शनिक परिप्रेक्ष्य'' श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा उ.प्र.
3. लाल रमन बिहारी एवं पलोद सुनीता 2013-14 ''शैक्षिक चिंतन एवं प्रयोग'' विनय रखेजा, आर. लाल बुक डिपो मेरठ
4. नंद कुमार जे 2019- 2020 '' बदलते दौर में हिंदुत्व'' इंडस स्कॉल्स भाषा B-98 प्रथम तल, जे.पी. गार्डन मोहनगर गाजियाबाद (उ.प्र.)